National Journal of Research and Innovative Practices (NJRIP)
Vol-10 | Issue-02, 2025 | ISSN: 2456-1355 | http://www.edusanchar.com

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा का महत्व और आवश्यकता

Priyanka Meena, Principal
LBS Academy Special School. Kota, Rajasthan

भूमिका

बौद्धिक अक्षम (Intellectually Disabled) बच्चों को समाज में आत्मनिर्भर बनाने और उनकी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शिक्षा न केवल उनके कौशल को विकसित करने में मदद करती है, बल्कि उन्हें समाज का उपयोगी सदस्य बनने का अवसर भी प्रदान करती है।

बौद्धिक अक्षम (Intellectually Disabled) बालक वे होते हैं, जिनकी बौद्धिक क्षमता औसत से कम होती है और जिन्हें सीखने, समझने और दैनिक जीवन की गतिविधियों को करने में कठिनाई होती है। ऐसे बच्चों को विशेष देखभाल, शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और समाज में सम्मानजनक जीवन जी सकें।

"Significantly sub average general intellectual functioning existing concurrently with deficits in adoptive behaviour and manifested during the developmental period" —The American Association on Mental Deficiency 1973

Mental deficiency is a condition of subnormal development present at birth or early childhood and characterized by limited intelligence and social inadequacy" — Page (1958)

"Mental retardation is defined as in complete or insufficient general development of the mental capacities" — Eysenck (1972)

बौद्धिक अक्षमता के स्तर

बौद्धिक अक्षमता को मुख्यतः चार स्तरों में बाँटा जाता है:

1. **हल्की बौद्धिक अक्षमता (Mild Intellectual Disability)**
    - IQ: 50-70
    - ये बच्चे बुनियादी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और सरल कार्य करने में सक्षम होते हैं।
    - जीवन में कुछ हद तक स्वतंत्र हो सकते हैं।

2. **मध्यम बौद्धिक अक्षमता (Moderate Intellectual Disability)**
    - IQ: 35-50
    - इन्हें दैनिक जीवन की गतिविधियों के लिए सहायता की आवश्यकता होती है।
    - ये व्यावसायिक प्रशिक्षण से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।
3. **गंभीर बौद्धिक अक्षमता (Severe Intellectual Disability)**
    - IQ: 20-35
    - इन्हें जीवन भर देखभाल और सहायता की जरूरत होती है।
    - वे सरल आजीविका कार्य कर सकते हैं यदि उचित प्रशिक्षण दिया जाए।
4. **गहरी बौद्धिक अक्षमता (Profound Intellectual Disability)**
    - IQ: 20 से कम
    - इन्हें पूर्ण देखभाल की जरूरत होती है।
    - इनका संचार और आत्मनिर्भरता बहुत सीमित होती है।

बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों की विशेषताएँ

- बौद्धिक विकास में देरी
- सीखने की गति धीमी होती है
- भाषा और संचार में कठिनाई
- सामाजिक और भावनात्मक चुनौतियाँ
- दैनिक जीवन की गतिविधियों में कठिनाई

चुनौतियाँ और समाधान

1. शिक्षा और सीखने में कठिनाई

✅ **समाधान**

- विशेष शिक्षा (Special Education) कार्यक्रम अपनाना
- सरल और दृश्य आधारित शिक्षण सामग्री का उपयोग करना
- व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना

2. सामाजिक स्वीकृति की समस्या

✅ **समाधान**

- जागरूकता अभियान चलाना
- समाज में समावेशन (Inclusion) को बढ़ावा देना
- सहपाठियों और परिवार को प्रशिक्षित करना कि वे सहानुभूति रखें

3. आत्मनिर्भरता की कमी

✅ **समाधान**

- व्यावसायिक शिक्षा देना
- आत्मनिर्भर बनने के लिए दैनिक जीवन कौशल सिखाना
- छोटे-छोटे घरेलू या श्रम आधारित कार्यों में प्रशिक्षित करना

4. आत्मविश्वास की कमी

✅ **समाधान**

- सकारात्मक प्रोत्साहन देना
- खेलकूद और कला जैसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना
- आत्मनिर्भर बनने के छोटे लक्ष्य निर्धारित करना

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व

व्यावसायिक शिक्षा मानसिक मंदित बच्चों के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि यह उन्हें रोज़गार और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने में मदद करता है। कुछ उपयोगी व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम:

1. **आत्मनिर्भरता विकसित करना** – व्यावसायिक शिक्षा से बच्चे आत्मनिर्भर बनते हैं और अपनी रोजमर्रा की जरूरतें स्वयं पूरी कर सकते हैं।
2. **रोजगार के अवसर** – इस शिक्षा से बच्चों को रोजगार के अवसर मिलते हैं, जिससे वे अपनी जीविका चला सकते हैं।
3. **सामाजिक समावेशन** – व्यावसायिक शिक्षा मानसिक मंदित बच्चों को समाज की मुख्यधारा में लाने में सहायक होती है।
4. **आत्मसम्मान बढ़ाना** – जब ये बच्चे अपनी मेहनत से कुछ अर्जित करते हैं, तो उनका आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ता है।
5. **परिवार पर निर्भरता कम करना** – प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार करने से वे अपने परिवार पर कम निर्भर होते हैं, जिससे अभिभावकों पर वित्तीय बोझ कम होता है।

6. **व्यावहारिक कौशल विकसित करना** – यह शिक्षा बच्चों को जीवन के व्यावहारिक कौशल सिखाती है, जिससे वे दैनिक कार्यों को सुचारू रूप से कर सकते हैं।

- सिलाई और कढ़ाई
- बागवानी
- मोमबत्ती और अगरबत्ती बनाना
- पैकिंग और लिफाफा निर्माण
- बढ़ईगिरी और मिट्टी के बर्तन बनाना

व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता

1. बौद्धिक अक्षमता के स्तर के अनुसार शिक्षा

बौद्धिक अक्षमता हल्की, मध्यम और गहरी हो सकती है, जिसके आधार पर इन बच्चों के लिए विशेष रूप से अनुकूल पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है।

- **हल्की बौद्धिक अक्षमता**– ये बच्चे सरल तकनीकी कार्य जैसे सिलाई, बढ़ईगिरी, बागवानी, कंप्यूटर संचालन, पैकिंग आदि सीख सकते हैं।
- **मध्यम बौद्धिक अक्षमता**– इन्हें बुनियादी श्रम-आधारित कार्य जैसे घरेलू सहायता, कृषि कार्य, हस्तशिल्प, मोमबत्ती बनाना आदि सिखाया जा सकता है।
- **गंभीर बौद्धिक अक्षमता**– इनके लिए स्व-देखभाल और दैनिक जीवन कौशल जैसे सफाई, भोजन तैयार करना, छोटे मोटे हस्तकला कार्य आदि पर ध्यान दिया जाता है।

2. रोजगार और स्वरोजगार के अवसर

- **सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा सहयोग** – कई संस्थाएँ मानसिक मंदित बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं।
- **स्वरोजगार को बढ़ावा** – मानसिक मंदित बच्चे छोटे व्यवसाय जैसे अगरबत्ती बनाना, हस्तशिल्प, मोमबत्ती निर्माण, जैविक खेती आदि कर सकते हैं।
- **समाज में स्वीकार्यता** – जब इन बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, तो वे समाज में स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं और सम्मानपूर्वक जीवन जी सकते हैं।

केस स्टडी: बौद्धिक अक्षम बच्चे की सफलता की कहानी

नाम: रोहन

पृष्ठभूमि:

रोहन एक मध्यम बौद्धिक अक्षम बच्चा था। उसे पढ़ाई में कठिनाइयाँ होती थीं, लेकिन उसे हाथों से काम करना पसंद था।

प्रशिक्षण और हस्तक्षेप:

- विशेष विद्यालय में रोहन को मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया गया।
- धीरे-धीरे उसने अपने कौशल में सुधार किया और स्कूल में होने वाली प्रदर्शनियों में अपनी मोमबत्तियाँ बेचनी शुरू कीं।
- कुछ वर्षों बाद, एक एनजीओ की सहायता से उसने अपना छोटा व्यवसाय शुरू किया।

परिणाम:

- अब रोहन हर महीने अच्छी आय अर्जित करता है।
- वह समाज में आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान के साथ जी रहा है।
- उसका परिवार अब उसे एक बोझ नहीं, बल्कि एक आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में देखता है।

निष्कर्ष

बौद्धिक अक्षम बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा केवल एक शैक्षिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि उनके उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है। मानसिक मंदित बच्चों को केवल देखभाल की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन जीने के अवसर देने की जरूरत होती है। यह उन्हें आत्मनिर्भर बनाने, उनके आत्मसम्मान को बढ़ाने और समाज में उनकी पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सही शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामाजिक सहयोग से ऐसे बच्चों का जीवन बेहतर बनाया जा सकता है। सरकार, गैर-सरकारी संगठन, और समाज को मिलकर इन बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करने चाहिए, समाज को इन्हें सहानुभूति, समर्थन और अवसर देने चाहिए ताकि वे अपनी क्षमता के अनुसार बेहतर जीवन जी सकें!